सरल मारवाड़ी में हनुमान चालीसा

(राजीव शर्मा, कोलसिया)

Read More Books At Our

Online Library

ganvkagurukul.blogspot.com

Copyright – Rajeev Sharma

All rights reserved **published- 2014**

।।श्रीहनूमते नमः।।

सरल मारवाड़ी में हनुमान चालीसा

(**अनुवाद:** राजीव शर्मा, कोलसिया)

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज

निज मन मुकुरु सुधारि।

बरनऊं रघुबर बिमल जसु

जो दायक फल चारि।।

अनु.- सबसूं पैली मैं गुरु म्हाराज कै चरणां मं नमसकार करूं हूं। आंकी चरणां की धूळ सूं बी मन का भरम और दोस मिट ज्यावीं हीं। पाछै मैं भगवान रामचंदर जी कै उजवल जस की वंदना करूं हूं, जीसूं धरम, अरथ, काम और मोक्स - अै च्यारूं फळ मिल ज्यावीं हीं।

बुद्धिहीन तनु जानके,

सुमिरौं पवन-कुमार।

बल बुधि बिद्या देहु मोहिं,

हरहु कलेस बिकार।।

अनु.- मैं खुद नै बुद्दी सूं हीन (अग्यानी) समझके हणमान जी म्हाराज नै सुमरूं हूं। मेरी बिणती है कि थे मन्नैं ताकत, बुद्दी और बिद्या देवो। मन्नैं तकलीफ और बुरायां सूं बचाओ।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।

जय कपीस तिहुं लोक उजागर।।

अनु.- हे ग्यान और गुण का सागर हणमान जी म्हाराज, थारी जय हो। हे कपीस (बांदरां का राजा), तीनूं लोकां मं थारो ई नाम है। (भगती और बल सूं तीनूं लोकां मं थारो ई नाम ऊजळो है)। थारी जय हो।

राम दूत अतुलित बल धामा।

अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।।

अनु.- थे भगवान रामचंदर जी का दूत और भोत घणा बलसाली हो। थे मां अंजनी का लाल हो। पवन-सुत थारो नाम है।

महाबीर बिक्रम बजरंगी।

कुमति निवार सुमति के संगी।।

अनु.- हे बजरंग बली, थे महाबीर और पराकरमी हो। थारै सुमरण सूं बुरा बिचार दूर होवीं और आछी बुद्दी आवै।

कंचन बरन बिराज सुबेसा।

कानन कुंडल कुंचित केसा।।

अनु.- थारो सोवणो रूप सोना जिसो चमकै है। थारै कानां मैं कुंडल और सीस पर घुंघराळा केस सोभा पावीं हीं।

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै।

कांधे मूंज जनेऊ साजै।।

अनु.- थारै अेक हाथ मं बज्र (घोटो) और दूसरां मं धज्जा (झंडो) है। थारै कांधै पर मूंज की जनेऊ सोभा पावै है।

संकर सुवन केसरीनंदन।

तेज प्रताप महा जग बंदन।।

अनु.- थे भगवान सिव का रूद्र अवतार और केसरी जी का सुपुत्तर हो। थारै तेज परताप की सगळो संसार पूजा करै है।

बिद्यावान गुनी अति चातुर।

राम काज करिबे को आतुर।।

अनु.- थे बिद्या का भंडार, गुणवान और घणा बुद्दीमान हो। भगवान रामचंदर जी कै काम कले थे हमेसा त्यार हो।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।

राम लषन सीता मन बसिया।।

अनु.- भगवान रामचंदर जी की कथा सुणनां मं थे मगन हो ज्यावो हो। श्री राम-लिछमण जी और सीता जी थारै मन मं बसीं हीं।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।

बिकट रूप धरि लंक जरावा।।

अनु.- असोक बाटिका मं थे छोटो-सो रूप धरके सीता जी सूं मिल्या। और बडो रूप बणाके लंका जळाई।

भीम रूप धरि असुर संहारे।

रामचंद्र के काज संवारे।।

अनु.- थे सूरबीर और बलसाली रूप धरके राकसां को बिनास कर दिया। और भगवान रामचंदर जी का काम सुंवार् या (हर काम ठीक तरै सूं कर् या)।

लाय सजीवन लखन जियाये।

श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।

अनु.- संजीवणी बूटी ल्याके थे लड़ाई मं लिछमण जी का पराण बचाया। ईसूं भगवान रामचंदर जी भोत घणा राजी होया।

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।

तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।

अनु.- जद भगवान रामचंदर जी थारी भोत बडाई करी और थानैं भरत जिसो प्रिय भाई बताया।

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।

अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।

अनु.- पाछै भगवान थारी हिम्मत और बीरता नै ईको जस दिया और थानैं गळै सूं लगाया।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।

नारद सारद सहित अहीसा।।

अनु.- सनकादिक च्यारूं रिसी (सनक, सनंदन, सनातन और सनत कुमार), बरमा जी, नारद, देबी सुरसती और सेसनाग।

जम कुबेर दिगपाल जहां ते।

कबि कोबिद कहि सके कहां ते।।

अनु.- जमराज, कुबेर, ब्रमांड कै च्यारूं कूणां का रुखाळा दिकपाल, बडा बिदवान और कवि बी थारी महिमा पूरी कोनी बता सकीं।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।

राम मिलाय राज पद दीन्हा।।

अनु.- सुगरीव नै भगवान रामचंदर जी सूं मिलाके थे बीं पर घणी करपा करी और बिन्नैं राजा बणा दिया।

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना।

लंकेस्वर भए सब जग जाना।।

अनु.- बिभीसण बी राम भगती की थारी बात मानी और लंका को राजा बण्यो, या बात पूरी दुनिया जाणै है।

जुग सहस्र जोजन पर भानू।

लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

अनु.- धरती सूं कई हजारूं कोसां दूर सूरज नै थे टाबरपणां में मीठो फळ समझ के निगळ लिया।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।

जलधि लांघि गये अचरज नाहीं।।

अनु.- राम जी की अंगूठी मूं में लेके थे समदर पर सूं उडान भरी और लंका गया। क्यूंकि थे बडा बलवान हो, तो ई बात में कोई अचंबो कोनी है।

दुर्गम काज जगत के जेते।

सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

अनु.- ई दुनिया में जितणा बी मुसकिल काम हीं बै सगळा थारी करपा सूं आसान हो ज्यावीं हीं।

राम दुआरे तुम रखवारे।

होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।

अनु.- भगवान रामचंदर जी की करपा का थे ई पहरादार हो। राम जी की भगती और करपा थारी इजाजत कै बिना कोनी मिल सकै।

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।

तुम रच्छक काहू को डर ना।।

अनु.- जो कोई थारी सरण मं आ ज्यावै बिन्नैं सगळा सुख मिल ज्या वीं। जीं'का थे रुखाळा हो बिन्नैं डरणा की कोई जरूरत कोनी।

आपन तेज सम्हारो आपै।

तीनों लोक हांक ते कांपै।।

अनु.- थे ई थारो तेज सम्हाळ सको हो। थारी गरजना सूं ई तीनूं लोक थर्राबा लाग ज्यावीं हीं।

भूत पिसाच निकट नहिं आवै।

महाबीर जब नाम सुनावै।।

अनु.- हणमान जी कै नाम मं बी इतणी ताकत है कि भूत-पिसाच और बुरी आतमा नजदीक कोनी आ सकीं।

नासै रोग हरै सब पीरा।

जपत निरंतर हनुमत बीरा।।

अनु.- जो कोई बी लगातार बीर बाला जी म्हाराज को नाम सुमरै है बींका सगळा रोग और पीड़ा खतम हो ज्यावीं हीं।

संकट तें हनुमान छुड़ावै।

मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।

अनु.- हणमान जी को मन, करम और बचनां सूं जो बी कोई ध्यान करै है, बिन्नैं बै हर संकट सूं बचावीं हीं।

सब पर राम तपस्वी राजा।

तिन के काज सकल तुम साजा।।

अनु.- हे हणमान जी म्हाराज, राजा रामचंदर जी का काम बी थे ई बणाया हो, जो पूरै ब्रमांड का भगवान हीं।

और मनोरथ जो कोई लावै।

सोइ अमित जीवन फल पावै।।

अनु.- थारी भगती करणियो जो बी मन मं कामना करै है, बींको जीवन मं बडो फळ बिन्नैं जरूर मिलै है।

चारो जुग परताप तुम्हारा।

है परसिद्ध जगत उजियारा।।

अनु.- च्यारूं जुग (सत जुग, तरेता, दुआपर और कळ जुग) मं थारो ई परताप है। ई संसार मं राम भगती, बीरता जिसा गुणां सूं थारो ई नाम ऊजळो है।

साधु संत के तुम रखवारे।

असुर निकंदन राम दुलारे।।

अनु.- भला लोग और साधु-संतां का थे ई रुखाळा हो। थे भगवान राम जी का दुलारा, दुस्टां नैं नस्ट करणिया हो।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।

अस बर दीन जानकी माता।।

अनु.- थे आठूं सिद्दी और नौ निधियां का दाता हो। यो बरदान थानैं माता ज्यानकी सूं मिलेड़ो है।

राम रसायन तुम्हरे पासा।

सदा रहो रघुपति के दासा।।

अनु.- हे हणमान जी म्हाराज, थारै कन्नैं भगवान राम जी की भगती है और थे सदा-सदा कले राम जी का दास हो।

तुम्हरे भजन राम को पावै।

जनम जनम के दुख बिसरावै।।

अनु.- थारै भजन और सुमरण सूं हर कोई नै भगवान राम जी मिल सकीं हीं। थारी करपा सूं जनम-जनम कै दुखां सूं मुकती मिल ज्यावै है।

अंत काल रघुबर पुर जाई।

जहां जन्म हरि-भक्ति कहाई।।

अनु.- थारी भगती करणियो ई जीवन कै पाछै भगवान राम जी कै लोक मं जावै और पाछै भगवान कै भगत को पद पावै।

और देवता चित्त न धरई।

हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।

अनु.- अगर कोई (और देवता की जगां) अेकला हणमान जी म्हाराज की ई भगती करै तो बिन्नैं बी सगळा सुख मिल सकीं हीं।

संकट कटै मिटै सब पीरा।

जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।

अनु.- महाबीर हणमान जी नै जो कोई सुमरै है, बींका सगळा संकट और सगळी पीड़ा मिट ज्यावीं हीं।

जै जै जै हनुमान गोसाईं।

कृपा करहु गुरु देव की नाईं।।

अनु.- हे हणमान जी म्हाराज, थारी जय हो, जय हो, जय हो। थे मन्नैं टाबर जाणके मेरै पर गुरु म्हाराज जिसी करपा करो।

जो सत बार पाठ कर कोई।

छूटहि बंदि महा सुख होई।।

अनु.- ई हणमान चालीसा को जो सौ बार पाठ करैगो बो ई दुनिया की हर बिपदा, माया और बंधन सूं मुक्त हो ज्यावैगो।

जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा।

होय सिद्धि साखी गौरीसा।।

अनु.- भगवान सिव ई बात का गवाही हीं कि ई हणमान चालीसा को जो कोई पाठ करैगो, बींकी मनोकामना सिद्ध होवैगी।

तुलसीदास सदा हरि चेरा।

कीजै नाथ हृदय महं डेरा।।

अनु.- सदा भगवान कै दास ई तुळसीदास की या बिणती है कि हे भगवान, थे हमेसा मेरै हिरदै मं बास करो।

दोहा

पवनतनय संकट हरन,

मंगल मूरति रूप।

राम लखन सीता सहित,

हृदय बसहु सुर भूप।।

अनु.- हे पवन पुत्तर, संकट हरबा हाळा और मंगल करणिया हणमान जी, थे भगवान रामचंदर जी, लिछमण जी और सीता जी कै साथ सदा-सदा कले मेरै हिरदै मं बिराजो।

… ganvkagurukul.blogspot.com…

‘गांव का गुरुकुल’ : पथ और परिचय

‘गांव का गुरुकुल’ एक ऑनलाइन पुस्तकालय है। पूर्व में यह राजस्थान के झुंझुनूं जिले के गांव कोलसिया में एक पुराने भवन में परंपरागत रूप से संचालित किया जाता था। शुरुआत में इसका कोई नाम नहीं था और इसके सदस्य भी बहुत कम थे। यह महज 10 किताबों से शुरू किया गया पुस्तकालय था जो बाद में गांव के बच्चों के बीच बहुत लोकप्रिय हुआ। तब गांव के अनेक विद्यार्थी यहां देर रात तक अध्ययन करते थे और यह पूरी तरह निशुल्क था।

इसकी स्थापना इसी गांव के राजीव शर्मा ने अपनी स्कूली पढ़ाई के दिनों में साल 2000 की सर्दियों में की थी। साल 2007 की बसंत पंचमी को इसका विधिवत उद्घाटन किया गया। साल 2010 तक इसका संचालन यथावत रहा। इसके बाद पुस्तकालय -संस्थापक के जयपुर चले जाने से यह बंद हो गया। यहां से लगभग तीन साल के तकनीकी अनुभव के बाद 2013 में यह पुस्तकालय नए स्वरूप में इंटरनेट पर शुरू किया गया। इसका नया नाम **- गांव का गुरुकुल** रखा गया। इंटरनेट पर इसकी शुरुआत इस मकसद के साथ की गई थी कि इससे देश-विदेश के किसी भी गांव और शहर का कोई भी विद्यार्थी जुड़कर अपनी मनपसंद सामग्री बिना किसी शुल्क के प्राप्त कर सकेगा।

पुस्तकालय के वेब पते **(ganvkagurukul.blogspot.com)** पर आप देश-दुनिया के अनेक अखबार, पत्रिकाएं और कई पुस्तकें निशुल्क पढ़ सकते हैं। वास्तव में यह ज्ञान का एक ऐसा वेब घर है जो अब किसी एक गांव का नहीं है। यह सबका है।

पुस्तकालय की तीन विशेषताएं हैं - **Free, Easy and Paperless.**

संस्थापक के बारे में

नाम : राजीव शर्मा

जन्म : 6 अगस्त, 1987 - राजस्थान के झुंझुनूं जिले के कोलसिया गांव में।

ज्यादातर स्कूली शिक्षा इसी गांव के राजकीय विद्यालय से प्राप्त की। साल 2000 में कुछ किताबों के साथ पुराने घर में लाइब्रेरी की शुरुआत। 2005 में एक सड़क दुर्घटना के बाद नेचुरोपैथी का अध्ययन व खुद पर इसके प्रयोग किए। 24 वर्ष की उम्र में एक पत्रिका में नेचुरोपैथी पर नियमित कॉलम लेखन। अफगानिस्तान के कुछ पत्र-पत्रिकाओं में भी आलेख प्रकाशित। कई रचनाओं का मारवाड़ी में अनुवाद किया।

मेरा मानना है कि जीवन एक पुल की तरह है। इस पर घर बनाने की बजाय किसी एक मकसद के लिए सफर जारी रखना चाहिए। वर्तमान में गांव का गुरुकुल ऑनलाइन लाइब्रेरी के माध्यम से इंटरनेट पर उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन। अनेक विद्यार्थियों को सुंदर हस्तलिपि (हैंडराइटिंग) के लिए प्रशिक्षण भी दिया।

खुद पर नेचुरोपैथी के प्रयोग के बाद एक लघु उद्योग की शुरुआत और कुछ उत्पादों का निर्माण। मैं इंटरनेट को शिक्षा के साथ ही ग्रामीण भारत पर आधारित उद्योगों के प्रसार का जरिया बनाना चाहता हूं। मेरा सपना गांव का गुरुकुल को एक ऐसे विद्यालय के रूप में विकसित करना है जहां मोटी व उबाऊ किताबें और पीट-पीट कर पढ़ाने वाले अध्यापक न हों। एक ऐसा स्कूल जिसमें हर विषय पर ढेरों रोचक किताबें बिल्कुल मुफ्त उपलब्ध हों। मेरा लक्ष्य सबसे बड़ी लाइब्रेरी बनाना नहीं है लेकिन मैं एक अच्छी लाइब्रेरी जरूर बनाना चाहता हूं।

संपर्क सूत्र

write4mylibrary@gmail.com

ब्लॉग

ganvkagurukul.blogspot.com

“दुनिया एक बहुत बड़ी लाइब्रेरी है। यहां हम यह तय नहीं कर सकते कि कौनसी किताब हमें दी जाएगी, लेकिन यह तय करने का अधिकार हमें है कि इसमें कैसी कहानी लिखी जाएगी।”

-- राजीव शर्मा, कोलसिया

ganv ka gurukul

Online Store of Knowledge….

ganvkagurukul.blogspot.com